

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 18, जॉन 16:16-17:26

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 18 है, विदाई प्रवचन, दुख के बारे में शिक्षण और एक अंतिम प्रार्थना। यूहन्ना 16:16-17:26.

विदाई प्रवचन, जॉन 13 से 17 पर हमारे चौथे और अंतिम वीडियो में आपका स्वागत है। हम इस प्रवचन को एक ऐसे प्रवचन के रूप में देख रहे हैं जो एक प्रस्तावना द्वारा तैयार किया गया है, जिसमें यीशु शिष्यों के लिए मूल्यों के प्रकार का मॉडल प्रस्तुत करते हैं। वह अब सिखा रहा है और उन्हें सच्ची विनम्रता की प्रकृति दिखाता है और उन्हें विनम्रतापूर्वक एक-दूसरे की सेवा करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। तो, हम अध्याय 13, श्लोक 31 के अंत से लेकर वास्तव में 16:33 तक के प्रवचन को देख रहे हैं, और हमारे पास वह है जिसे हम यहां पोस्टल्यूड कह रहे हैं।

निश्चित नहीं कि यह सबसे अच्छा शब्द है, लेकिन प्रवचन यीशु द्वारा शिष्यों के लिए मध्यस्थता के साथ समाप्त होता है। इसलिए, वे देखते हैं कि वह उनके लिए सच्ची विनम्रता की प्रकृति का कार्य करता है, और उनके पैरों को धोना भी पाप से शुद्ध होने का आध्यात्मिक प्रतीक है। इसलिए, वह उन्हें उस आत्मा के बारे में सिखाता है जो आएगी और उन्हें सुसज्जित करेगी, और जैसे ही वह उनके साथ अपने रिश्ते को अंतिम रूप देता है, यदि आप चाहें तो वह मध्यस्थता की प्रार्थना के साथ इसे सील कर देता है।

तो मुझे लगता है कि यह समग्र तरीका है, जिसमें हम जॉन में विदाई प्रवचन, अध्याय 13 से 17 को देखते हैं। अब हम प्रवचन समाप्त कर रहे हैं, और हम अध्याय 16 के मध्य में हैं, और देख रहे हैं कि यीशु ने कैसे शिष्यों से बेल और शाखाओं की तरह उसमें बने रहने के बारे में बात की, और उनसे उन उत्पीड़न के बारे में वास्तविक रूप से बात की जो उनके रास्ते में आएंगे, और साथ ही उनसे इस बारे में बात की कि पवित्र आत्मा किस तरह से उनकी सहायता करेगा दुनिया के लिए गवाही। अब वह उनके लिए प्रार्थना करने जा रहा है और यदि आप चाहें तो अपने जुनून के बाद उन्हें आगे भेजेंगे।

जैसा कि यीशु उनके साथ आत्मा के कार्य के बारे में बात कर रहे हैं, मुझे लगता है कि अध्याय 16, श्लोक 16 में एक कविता है जो कुछ हद तक संक्रमणकालीन है। एनआईवी अनुवाद में, इसका अनुवाद किया गया है, यीशु ने कहा कि यदि आप हैं बाइबल का उपयोग करते हुए जो कि लाल अक्षर वाली होती है, मुझे यकीन नहीं है कि मैं उन्हें पूरी तरह से पसंद करता हूं, लेकिन कभी-कभी वे काम में आते हैं, आप अंतिम काले के बारे में देखने के लिए 16:16 से लेकर अध्याय 14 और श्लोक 22 तक देख सकते हैं पत्र। यहीं पर यहूदा, इस्करियोती यहूदा नहीं, बल्कि दूसरा, यीशु से पूछता है कि वह सार्वजनिक रूप से क्यों नहीं जा रहा है, और वह खुद को दुनिया के सामने क्यों नहीं दिखाने जा रहा है।

तो अनिवार्य रूप से, तब से, 14:23, यीशु बिना किसी रुकावट या सवाल या कुछ भी किए बिना सीधे शिष्यों से बात कर रहे हैं। अध्याय 14 के अंत में, श्लोक 31 में स्थान के संदर्भ में परिवर्तन है, जहां यीशु कहते हैं, अब आओ, हमें छोड़ दें, और वे एक अलग स्थान पर जा रहे हैं जिसके बारे में हम अभी भी निश्चित नहीं हैं वह कहां होगा। तो हम काफी आगे बढ़ चुके हैं, तब से, यहूदा के उस प्रश्न के बाद से, और अब 16:16, एक तरह से, मुझे लगता है, प्रवचन के अगले भाग में संक्रमण है, यीशु ने कहा, और हमारे पास एक कहावत है वह यहाँ है, थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे, थोड़ी देर बाद तुम मुझे देखोगे, मुझे लगता है कि वह हमें भविष्य के बारे में यीशु की शिक्षाओं और उसमें क्या होगा के बारे में शिक्षा के अंतिम भाग में स्थानांतरित करता है, और हमें उसकी ओर ले जाता है प्रार्थना।

इसलिए, यदि हम वही करते हैं जो हम यहां हमेशा से करते आ रहे हैं, और ध्यान दें कि कथा हमारे लिए किस तरह से सामने आती है, तो शिष्य इस शिक्षा को नहीं समझते हैं जो यीशु ने अभी 16:16 में दी थी। तो, वे स्पष्ट रूप से अपनी शारीरिक भाषा, अपने चेहरे के हाव-भाव, अपने कंधे उचकाने, एक-दूसरे से फुसफुसाने से दिखा रहे हैं कि उन्हें समझ नहीं आ रहा है कि वह किस बारे में बात कर रहे हैं। आपका क्या मतलब है, थोड़ी देर? यह व्यवसाय क्या है? इसलिए, यीशु इसके प्रति संवेदनशील हैं, और इसलिए उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें इस मामले पर कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

तो, हम आयत 19 में पढ़ते हैं, यीशु ने देखा कि वे उस से इस विषय में पूछना चाहते हैं, इसलिए उसने उनसे कहा, क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरा क्या मतलब है जब मैंने कहा, थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे, और फिर थोड़ी देर के बाद जब तक तुम मुझे फिर न देखोगे, और फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे देखोगे। तो, अध्याय 16 के इस खंड का पहला भाग उसी प्रश्न पर बात करता है, और यीशु अधिक से अधिक स्पष्ट हो जाता है, मुझे लगता है कि हम कहेंगे कि वह किस बारे में बोल रहा है, उसके शब्दों में अधिक से अधिक स्पष्ट। तो मुझे लगता है कि इस तरह की परिणति पद 28 में होती है, जहां यीशु ने कहा, मैं पिता से आया हूँ, और मैंने दुनिया में प्रवेश किया।

अब मैं संसार छोड़कर पिता के पास वापस जा रहा हूँ। तो, इस एबीबीए प्रकार की समानता के साथ, यीशु उनसे बहुत स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि वह जा रहे हैं, जो उनकी ओर से एक उत्तर जारी करता है। तो, हमारे पास शिष्य एक प्रश्न उठा रहे हैं, और यीशु उसका उत्तर दे रहे हैं, और अब शिष्य श्लोक 29 और 30 में यीशु को उत्तर दे रहे हैं।

अब आप हमें बहुत स्पष्ट रूप से और बिना अलंकारों के बता रहे हैं। यहां श्लोक 29 में भाषण का शब्द अलंकार वही शब्द है जिसे हमने अध्याय 10 में देखा था, पैरोडिमिया, आलंकारिक भाषा, एक रूपक, बोलने का एक आलंकारिक तरीका। तो, वे पद 30 में कहते हैं, अब हम देख सकते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और आपको किसी से प्रश्न पूछने की भी आवश्यकता नहीं है।

इससे हमें विश्वास होता है कि आप परमेश्वर की ओर से आए हैं। तो, उनकी ओर से उत्साहजनक प्रतिक्रिया में, वे कहते हैं, अब जब हम समझ गए हैं कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं, तो हम

आप पर विश्वास करने के लिए पहले से कहीं अधिक इच्छुक हैं। यीशु ने उन्हें एक बार फिर उत्तर दिया।

तो, हमारे पास यह पैटर्न है जो यहां घटित हो रहा है, एक तरह से उनके द्वारा प्रश्न उठाने और उसके उत्तर देने के बीच। तो, वह कहता है, क्या अब तुम सचमुच विश्वास करते हो? तो, मुझे लगता है, यीशु इसके साथ उनके चेहरे पर थोड़ा सा व्यवहार कर रहे हैं। क्या आप निश्चित हैं कि आपको यह मिला या नहीं? वैसे भी, वह कहते हैं कि एक समय आ रहा है, और वास्तव में अब आ गया है।

तो, यह उस प्रकार की भाषा है जिसे हमने अध्याय पाँच पर वापस जाने से पहले देखा है, जहाँ हमें एक प्रकार की गूढ़ विद्या की अनुभूति होती है। यीशु कह रहे हैं कि वह समय आ गया है, वह समय आ रहा है, वस्तुतः अब वह समय आ गया है जब तुम तितर-बितर हो जाओगे। तो, यीशु यहाँ उत्पीड़न के साथ कुछ हद तक साकार युगांत विज्ञान कर रहे हैं, कह रहे हैं कि भविष्य में एक समय आएगा जब आपको कठिनाइयाँ होंगी, आपको सताया जाएगा।

वास्तव में, ऐसा होने का समय अब आ गया है। तुम सब अपने अपने घर में मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं, क्योंकि पिता मेरे साथ है। ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम मुझ में शान्ति पाओ।

संसार में तुम्हें कष्ट होगा, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार पर जय पा ली है। मुझे लगता है कि यह जॉन के संपूर्ण सुसमाचार के उच्च नोट्स में से एक है। यह लगभग सार्वजनिक शिक्षण में शिष्यों को सीधे बोले गए यीशु के अंतिम शब्द हैं।

जॉन के सुसमाचार में, उसने दुनिया पर विजय प्राप्त की है। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह इस सुसमाचार में और समग्र रूप से जोहानाइन सामग्री में एक महत्वपूर्ण जोहानाइन विषय है। वापस आएँ और उसके बारे में बाद में कुछ और बात करें।

तो, फिर हम अध्याय 17 की ओर बढ़ते हैं, जो अनिवार्य रूप से एक अद्भुत प्रार्थना है जिसमें यीशु स्वर्गीय महिमा के संदर्भ में पिता के साथ अपने रिश्ते को दोहराते हैं। 17 में, एक से पाँच तक, वह सीधे अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना करता है जो उसके साथ वहीं हैं। छंद छह से 19 में, फिर वह प्रार्थना के अंत में उन लोगों के लिए प्रार्थना करना शुरू करता है जो उसके मूल शिष्यों की गवाही के माध्यम से उस पर विश्वास करेंगे।

अध्याय 17, श्लोक 20 से 26। यह मार्ग का प्रवाह है। संरचना के संदर्भ में, मुझे लगता है कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, शायद यह इसे थोड़ा और स्पष्ट कर देगा, कि यीशु 1615 तक उत्पीड़न के दौरान आत्मा की गवाही और उनकी गवाही के बारे में बोल रहे हैं।

तो, अब वह 1616 में संक्रमणकालीन बयान देता है, आप मुझे अब नहीं देखेंगे और फिर आप मुझे देखेंगे। इससे वे भ्रमित हो जाते हैं। इसलिए, वे इस बारे में आपस में बात कर रहे हैं।

इसलिए, वह उनकी अस्पष्टता, और उनकी भावना का जवाब देता है, और फिर उन्हें बहुत स्पष्ट रूप से समझाना शुरू करता है कि क्या हो रहा है। इसलिए, यदि आप 16:16 में तुलना करते हैं, तो आप मुझे कुछ समय के लिए नहीं देखेंगे और फिर आप मुझे देखेंगे, जो वह सीधे कह रहा है, मैं दुनिया छोड़कर पिता के पास जा रहा हूँ। यह बहुत अच्छी तरह से निष्कर्ष पर पहुंचता है, जो उन्हें संतुष्ट करता है और उन्हें वही मिलता है जो वह कह रहा है, जिस पर वह इस बार फिर से उनकी टिप्पणियों का जवाब देता है।

इसलिए, उनकी प्रतिक्रिया में अस्पष्टता और स्पष्टता की कमी है, जो उन्हें यह कहने के लिए प्रेरित करती है, अब हम समझ गए, अब स्पष्टता है। तो, वह उनकी स्पष्टता का जवाब देता है। इसलिए, वह स्पष्टता की कमी पर प्रतिक्रिया करता है और वह उस स्पष्टता पर प्रतिक्रिया करता है जो हासिल की गई है और स्थिति के बारे में फिर से बहुत यथार्थवादी रूप से बोलता है और फिर अध्याय 17 में उनके लिए प्रार्थना करता है।

मुझे लगता है कि कुछ प्रमुख विचार जिनके बारे में हम यहां सोचना और ध्यान देना चाहेंगे और शायद अतिरिक्त अध्ययन में ध्यान केंद्रित करना चाहेंगे, अगर समय मिले, तो एक बार फिर, दुख की वास्तविकता है। इसका उल्लेख पहले ही 16:16 में किया जा चुका है, क्षमा करें, 16 श्लोक 6, कि आप दुःख से भर गए हैं क्योंकि मैंने ये बातें आपसे कही हैं। तो मूलतः, आप दुःख से भरे हुए हैं कि मैं जा रहा हूँ और यह इस तथ्य से और भी बढ़ गया है कि मैंने आपको बताया है कि चीजें कठिन होने वाली हैं।

तो, वह पद 20 से 22 में एक बार फिर उस विषय पर वापस आता है। अब आपके दुःख का समय है, लेकिन मैं आपको फिर से देखूंगा और आप आनंद मनाएं और कोई भी आपका आनंद नहीं छीनेगा। और उस दिन तुम मुझसे फिर कुछ न पूछोगे।

मैं तुम से सच सच कहता हूँ, तुम मेरे नाम से जो कुछ मांगोगे, मेरा पिता तुम्हें देगा। अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा, और तुम पाओगे कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाएगा। तो, ऐसा लगता है कि यीशु वहां कह रहे हैं कि भले ही तुम दुखी हो और तुम शोक कर रहे हो, श्लोक 22, मैं तुम्हें फिर से देखूंगा और तुम आनंद मनाओगे।

तो, मुझे लगता है कि इसे समझने का सबसे सरल तरीका, पुनरुत्थान के बाद यीशु को यह कहते हुए देखना है, मैं तुम्हारे सामने फिर से प्रकट होऊंगा। लेकिन श्लोक 22 के बाद के शब्दों से ऐसा लगता है कि शायद वह उससे भी अधिक स्थायी बात के बारे में बोल रहे हैं। वह कहता है, उस दिन तुम मुझसे कुछ भी नहीं पूछोगे।

तुम मेरे नाम से जो कुछ मांगोगे, पिता तुम्हें देगा। ऐसा लगता है कि यह एक खुला बयान है। और इसलिए, इसका मतलब यह हो सकता है कि यीशु पुनरुत्थान के बाद उन्हें व्यक्तिगत रूप से फिर से देखने के बारे में इतना नहीं बोल रहे हैं, बल्कि तब से पवित्र आत्मा के माध्यम से उनके साथ चल रहे रिश्ते के बारे में बात कर रहे हैं।

पुनरुत्थान के समय के बाद केवल अपेक्षाकृत छोटी अवधि नहीं। तो, दुःख होने वाला है, लेकिन वह दुःख दूर हो जाएगा क्योंकि वे यीशु को फिर से देखेंगे। उन्हें एहसास होगा कि उनके साथ उनका रिश्ता खत्म नहीं हुआ है।

पुनरुत्थान के बाद वह उन्हें देखने के लिए वापस आएगा। और मुझे लगता है कि इसका एक और पहलू यह है कि वह पवित्र आत्मा के माध्यम से उनके साथ अपना रिश्ता जारी रखेगा। तो दुःख के साथ-साथ, उत्पीड़न की वास्तविकता भी है।

इसलिए, जैसे ही अध्याय 16 समाप्त होता है, हम उत्पीड़न के बारे में काफी कुछ पढ़ते हैं, जैसा कि हमने अध्याय 15 के दूसरे भाग में देखा। यीशु ने अध्याय 16 श्लोक 32 में इन शब्दों में उन सभी को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। समय आ रहा है।

बात तो तब आ गयी जब तुम बिखर जाओगे। यह बहुत स्पष्ट रूप से सीधे तौर पर इस बारे में बात कर रहा है कि जब यीशु को गिरफ्तार किया जाएगा तो क्या होगा। और हम इसके बारे में अपने अगले वीडियो अध्याय 18 में पढ़ना शुरू करेंगे।

सो तुम सब अपने अपने घर में तितर-बितर हो जाओगे। तुम मुझे बिल्कुल अकेला छोड़ दोगे। लेकिन मैं अकेला नहीं हूँ क्योंकि मेरे पिता मेरे साथ हैं।'

और यहाँ यीशु और उनके बीच कुछ समानता प्रतीत होती है। वह समय आता है जब उन्हें सताया जाएगा। उन्हें ऐसा महसूस होगा कि वे अकेले हैं, लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि यीशु आत्मा के माध्यम से उनके साथ रहेंगे।

जैसे यीशु स्वयं अकेले नहीं थे जब शिष्य तितर-बितर हो गए और उन्हें अकेला छोड़ दिया क्योंकि पिता उनके साथ थे। ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कही हैं, कि तुम मुझ में शान्ति पाओ। यह दिलचस्प है कि हम अक्सर शांति शब्द के बारे में ऐसे सोचते हैं जैसे कि शांति का अर्थ किसी भी उथल-पुथल, संघर्ष, या समस्या और कठिनाई का अभाव है।

हम कहते हैं, यदि हमें शांति मिलती तो सब कुछ होता। हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि काश जीवन की समस्याएँ दूर हो जातीं। शांति की बात करते समय यीशु का मतलब निश्चित रूप से यह नहीं था, क्योंकि उसने कहा था कि दुनिया में तुम्हें परेशानी होगी।

तो, यीशु जिस प्रकार के भाषण का वर्णन कर रहे हैं वह समस्याओं की अनुपस्थिति या कठिनाइयों की अनुपस्थिति या सब कुछ सुचारू रूप से चलने वाला नहीं है। संसार में तुम्हें कष्ट होगा। तो, यह लगभग वैसा ही है जैसे हम शांति और परेशानियों के बारे में सोचते हैं कि यीशु स्वयं का खंडन कर रहे हैं।

ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें शान्ति मिले। संसार में तुम्हें कष्ट होगा। यह लगभग वैसा ही है जैसे हम वहाँ परंतु रखना चाहते हैं।

लेकिन कोई किन्तु-परन्तु नहीं है। लेकिन दुनिया में आने के बाद आपको परेशानी होगी। संसार में तुम्हें कष्ट होगा।

लेकिन यह कहते हुए दिल थाम लीजिए कि अगर आपको एहसास हो जाए कि मैंने दुनिया पर जीत हासिल कर ली है तो आपको अपनी परेशानियों के बीच भी शांति मिल सकती है। मैंने संसार पर काबू पा लिया। यह दुःख की वास्तविकता और उत्पीड़न की वास्तविकता को जोड़ता है जिसे हम मन की शांति की वास्तविकता के साथ देख रहे हैं।

इन सभी परीक्षणों के बीच आप मानसिक शांति पा सकते हैं। यूहन्ना 14 पहले ही हमसे अपने हृदयों को परेशान न होने देने के बारे में बात कर चुका है। अध्याय 14 और श्लोक 1 और 14:17 इसी प्रकार कहते हैं कि संसार सत्य की आत्मा को स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे नहीं जानता और न ही उसे देखता है।

परन्तु तुम उसे अपने साथियों के लिये जानते हो, और वह तुम में रहेगा, और मैं तुम्हें शान्ति दूंगा। श्लोक 27 वास्तव में वह श्लोक है जिसकी मैं उनकी क्षमायाचना के लिए तलाश कर रहा था। शांति मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ।

अपने साथ छोड़ो। मैं तुम्हें अपनी शांति देता हूँ। मैं तुम्हें वैसा नहीं देता जैसा संसार देता है।

अपने मन को व्याकुल न होने दे और भयभीत न हो। इसलिए, यदि आप 14:1 में दिए गए उपदेश को 27 और 28 के उपदेश के साथ जोड़ते हैं और 16:33 को उसके साथ जोड़ते हैं तो आप देख सकते हैं कि यीशु उनसे एक स्थिर हृदय रखने की आवश्यकता के बारे में क्या कह रहे हैं, एक ऐसा हृदय जो ईश्वर पर केंद्रित हो और टूटा न हो। परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव से आगे-पीछे। और जो चीज मुझे कुछ मतलब निकालने में सक्षम बनाती है, वह है उसमें जीत की वास्तविकता।

दुनिया पर काबू पाने का यह विचार जॉन 16:33 में जीत की वास्तविकता एक महत्वपूर्ण मामला है, मेरा मानना है क्योंकि यह एक जोहानाइन विषय है जिसे हम सुसमाचार और पत्रों में और यहां तक कि सर्वनाश में भी कहीं और देखेंगे। हमें शायद इस विषय का पता लगाने में बस एक क्षण का समय लग सकता है। मुझे लगता है कि शिष्यों से यह कहना हमारे लिए फायदेमंद होगा कि खुश रहें, आपको समस्याएं होंगी लेकिन मैंने दुनिया पर विजय पा ली है।

फिर यीशु अपनी मृत्यु, अपने दफनाने और अपने पुनरुत्थान में दुनिया पर विजय प्राप्त करते हैं और अध्याय 20 में उन्हें पवित्र आत्मा से लैस करके उन्हें तैयार करते हैं ताकि वे दुनिया में उनकी अच्छी तरह से सेवा करने की क्षमता रखें। और इसके बारे में हम जॉन के सुसमाचार में बस इतना ही देखते हैं। यह उन लोगों के लिए बिल्कुल स्पष्ट है जो जॉन के सुसमाचार को पढ़ते हैं और फिर जॉन के पत्रों को विशेष रूप से प्रथम जॉन के पत्रों को पढ़ते हैं कि सुसमाचार और पत्रों के बीच वैचारिक रूप से भारी मात्रा में सहसंबंध है।

तो, हम जॉन और यीशु की इस टिप्पणी से देखते हैं कि मैंने दुनिया पर विजय पा ली है और जिस तरह से प्रथम जॉन काबू पाने के विचार का उपयोग करता है, उसमें आने वाली परेशानियों के बावजूद आपको मुझमें शांति मिलेगी। तो, हम यहां ग्रीक में क्रिया निकाई और संज्ञा निक्केई के

विचार का अनुसरण कर रहे हैं, जिसका ग्रीक देवता नाइके, विजय की देवी और युद्ध पर काबू पाने और जीतने के विचार से भी लेना-देना है। इसलिए जब हम 1 जॉन को देखते हैं, विशेष रूप से अध्याय 5 में हम पढ़ते हैं कि विश्वासियों के पास दुनिया पर विजय पाने की क्षमता है।

तो, हर कोई जो परमेश्वर से पैदा हुआ है 1 यूहन्ना 5:1 मुझे माफ करना, हर कोई जो यह विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से पैदा हुआ है। जो कोई पिता से प्रेम करता है वह अपने बच्चे से भी प्रेम करता है। इस तरह हम जानते हैं कि हम ईश्वर से प्रेम करके और उसकी आज्ञाओं का पालन करके ईश्वर के बच्चों से प्रेम करते हैं।

वास्तव में, यह ईश्वर के लिए उसकी आज्ञाओं का पालन करने का प्रेम है और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं। हमारे यहां भगवान से पैदा हुआ हर कोई दुनिया पर विजय प्राप्त करता है और यही वह जीत है जो दुनिया पर विजय प्राप्त करती है। यहाँ तक कि हमारा विश्वास भी वह कौन है जो संसार पर केवल वही विजय प्राप्त करता है जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

तो, इस तरह, जॉन का पहला पत्र यीशु की जीत को दर्शाता है जिसके बारे में वह कहता है कि उसने क्रूस की प्रतीक्षा करते हुए इसे पूरा किया है। मैंने संसार पर विजय प्राप्त कर ली है और यह कहता है कि जो यीशु पर विश्वास करता है, उसने संसार पर विजय प्राप्त कर ली है। इसलिए, हम अपने विश्वास के द्वारा मसीह की जीत में भागीदार हैं।

कभी-कभी मैंने सुना है कि इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि कुछ सुपर ईसाई हैं जिन्होंने दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली है। वे विजेता हैं। उनमें किसी प्रकार का एक विशेष स्तर का विश्वास या ईश्वर का विशेष स्तर का आशीर्वाद होता है जो उन्हें दूसरों से अलग करता है।

वे ईसाइयों के ऊपरी सोपान के समान हैं। वे हैं, मैं नहीं जानता कि इसके बारे में सैन्य संदर्भ में सोचना कठिन है। वे विशेष बल हैं।

वे ग्रीन बेरेट्स हैं। वे जो कुछ भी हैं। लेकिन मुझे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जिस तरह से जॉन इस बारे में बात कर रहा है वह ऐसा नहीं है, कि कुछ विशेष ईसाई हैं जिनके पास यह है।

लेकिन जो कोई यीशु पर विश्वास करता है वह उसकी जीत में भागीदार है। प्रथम जॉन अध्याय 5 छंद 4 और 5 के अनुसार। आपको यह भी याद होगा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सर्वनाश पर भी काबू पाने का एक संदर्भ है। और हम अध्याय 5 श्लोक 5 में भी ऐसे संदर्भ पा सकते हैं जो मुझे लगता है कि हमें यह समझने में मदद करते हैं कि वास्तव में इसका मर्म क्या है।

आपको याद होगा कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 स्वर्गीय सिंहासन कक्ष से एक दर्शन है। और हमारे पास विभिन्न देवदूत प्राणी हैं और स्पष्ट रूप से चर्च का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारा एक समूह है जिसे 24 बुजुर्ग कहते हैं।

तो, प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा प्रकाशितवाक्य 5 5 रोओ मत। यहूदा के गोत्र की वंशावली को देखें, जो डेविड की जड़ है, यहाँ पुराने नियम की बहुत सारी कल्पनाएँ विजयी हुई हैं। निःसंदेह, यहाँ 55 में जो शब्द विजयी हुआ वह वही है जो यीशु ने यूहन्ना 16:33 में कहा था।

मैंने संसार पर काबू पा लिया। इसलिए, वह उस पुस्तक और उसमें लगी सात मुहरों को खोलने में सक्षम है। इसे ध्यान में रखते हुए एक बार फिर यह पुष्टि की गई कि यीशु ने अपने मुक्तिदायक कार्य से दुनिया पर विजय प्राप्त की है।

सात चर्चों को लिखे लगभग सभी पत्रों के समापन पर हमें याद दिलाया जाता है। विजेता से किया गया एक वादा है। हम उनमें से हर एक को देखने के लिए समय नहीं लेंगे।

लेकिन हमारे पास उन सभी सात पत्रों में विजेता का भी संदर्भ है। इसलिए, हमारा यह दायित्व बनता है कि हम इसका पता लगाएं, अध्ययन करें और इस बात पर थोड़ा विचार करें कि इस विचार का क्या मतलब है कि मैंने दुनिया पर विजय पा ली है। लेकिन इसके आलोक में, हमें यह भी सोचना चाहिए कि यीशु का दुनिया से क्या मतलब था।

तो, अगर उसने दुनिया पर विजय पा ली है तो इसका क्या मतलब है कि मैंने दुनिया पर जीत हासिल कर ली है? अक्सर जब हम दुनिया शब्द के बारे में सोचते हैं तो हमें लगता है कि हम आज बात कर रहे हैं तो हम कहेंगे कि शायद यह सौर मंडल है या शायद यह ग्रह है। या उन पंक्तियों के अनुरूप कुछ सामग्री या किसी प्रकार की स्थानिक इकाई।

और मुझे लगता है कि जॉन में ऐसी जगहें हैं जहां दुनिया का उपयोग किया जाता है, जिनके शायद उस प्रकार के अर्थ हैं। लेकिन जॉन में इस पर इतना अधिक ध्यान नहीं दिया गया है, भले ही यह कभी-कभार होता है। जॉन का ध्यान इस बात पर अधिक है कि दुनिया एक नैतिक इकाई है।

यह एक प्रकार की इकाई है, एक प्रणाली है, विचारों का एक समूह है, जिसमें नैतिक निहितार्थ हैं और आमतौर पर बुरे नैतिक आशय हैं। इसलिए, जब यीशु कहते हैं कि मैंने दुनिया पर विजय पा ली है तो मुझे लगता है कि वह उन चीजों के बारे में बोल रहे हैं जिन्हें हम जॉन में कहीं और देखेंगे। तो, हम जॉन में कहीं और जानते हैं कि दुनिया भगवान द्वारा बनाई गई थी।

वह आया, उसने वह संसार बनाया जो वह संसार में था और संसार उसके द्वारा बनाया गया था। फिर भी दुनिया उसे जानती थी न कि दुनिया वास्तव में उससे कोई लेना-देना नहीं चाहती थी। और हाल ही में हमारे संदर्भ में हम जॉन अध्याय 14 के साथ काम कर रहे हैं जब यीशु सत्य की भावना का परिचय देते हैं।

वह 14:17 में कहता है कि संसार उसे स्वीकार नहीं करता क्योंकि वह न तो उसे देखता है और न ही उसे जानता है। इसलिए, यह संसार परमेश्वर की आत्मा से शत्रुतापूर्ण है जिसे यीशु भेज रहे हैं। हम यहां प्रवचन में 15 श्लोक 18 और 19 को थोड़ा आगे देखते हैं।

अगर दुनिया तुमसे नफरत करती है तो याद रखो कि पहले उसने मुझसे नफरत की। यदि आप संसार के हैं तो वह आपको अपना मानकर प्रेम करेगा। लेकिन वैसे भी आप दुनिया से संबंधित नहीं हैं।

परन्तु मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है। इसी कारण संसार तुम से बैर रखता है। तो जाहिर तौर पर एक अर्थ यह है कि हर इंसान ईसाई हो या नहीं, दुनिया का हिस्सा है।

लेकिन एक ऐसी भावना है जिसमें जब लोग यीशु के अनुयायी बन जाते हैं तो वे मूल्यों की एक प्रणाली के अनुयायी बन जाते हैं, एक उद्धारकर्ता जिसने उन मूल्यों को अपनाया है जो दुनिया के मूल्यों के विपरीत हैं। यीशु कहते हैं, संसार तुम से बैर रखता है, क्योंकि उस ने पहले मुझ से बैर किया। निःसंदेह, ऐसे अन्य पाठ भी हैं जिनके समान अर्थ यहीं ऊपरी कक्ष के प्रवचन में हैं।

अध्याय 16 और श्लोक 20। अध्याय 17 श्लोक 14 और 25 16 20 कहता है कि अब आपके दुःख का समय है। क्षमा करें, यह 22 16 20 है, मैं कहता हूँ कि आप रोएंगे और आप शोक मनाएंगे जबकि दुनिया खुशियाँ मनाएगी।

वह ऐसा प्रतीत करता है कि यह क्रूस पर चढ़ने में यीशु की अनुपस्थिति की प्रतिक्रिया होगी। आप शोक करेंगे लेकिन आपका दुःख खुशी में बदल जाएगा 16:20. अध्याय 17 श्लोक 14 अपनी प्रार्थना के बीच में वह पिता से कहता है, मैं ने उन्हें अर्थात् चेलों को दिया है।

मैं ने उन्हें तेरा वचन दिया है, और जगत ने उन से बैर किया है, क्योंकि वे जगत के नहीं, जितना मैं जगत का हूँ। तो, एक अर्थ यह है कि यीशु के अनुयायियों के रूप में हमें जो संपूर्ण नैतिक परिवर्तन प्राप्त हुआ है, वह हमें ऐसे लोगों में से एक बनाता है जो सांसारिक मूल्यों, सांसारिक दर्शन और हमारे जीवन के अलग-अलग तरीकों से असहमत हैं, उनकी सराहना नहीं की जाती है। 17:25 धर्मी पिता, यद्यपि संसार तुझे नहीं जानता।

मैं तुम्हें जानता हूँ। आप शायद 1 जॉन अध्याय 2 के पाठ से भी परिचित हैं जो एक समान भाषा में दुनिया के बारे में बात करता है, आपको शायद एक क्षण लेना चाहिए और उस अंश को देखना चाहिए ताकि पत्रों की विषयगत एकता और जॉन 1 के सुसमाचार का अनुसरण किया जा सके। यूहन्ना अध्याय 2 और पद 15। संसार या संसार की किसी वस्तु से प्रेम मत करो।

यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो पिता से प्रेम करता है, वह संसार की हर वस्तु नहीं, शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा, जीवन का अभिमान पिता से नहीं, परन्तु संसार से आता है, और संसार और उसकी इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं दूर, परन्तु जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा। तो, दुनिया में क्या है इसके बारे में यह त्रियादिक अभिव्यक्ति, शरीर की वासना, आँखों की वासना, जीवन का गौरव, हालाँकि आप इसे कामुकता की स्थिति में तोड़ना चाहते हैं, बस गर्व का विचार है, ये सभी चीजें भगवान और के मूल्यों के विपरीत हैं। प्रथम जॉन का पत्र यह स्पष्ट करता है कि ये चीजें यीशु की शिक्षाओं के साथ उन मूल्यों के अनुकूल नहीं हैं जो उन्होंने हमें दिए हैं, इसलिए दुनिया एक नैतिक इकाई है जो भगवान के प्रति शत्रुतापूर्ण है और इससे भी अधिक और इससे भी बदतर यह शासित है शैतान द्वारा।

12 में कई ग्रंथों में यीशु शैतान को इस दुनिया के राजकुमार या शासक के रूप में बोलते हैं, हमारे पास हाल ही में हमारे संदर्भ में जॉन 16 जॉन 16 और श्लोक 11 में इस दुनिया का राजकुमार है। अब प्रोलेप्टिकली निंदा की जाती है, मुझे लगता है कि यीशु क्रूस के प्रकाश में बोल रहे हैं, शैतान

और उसका विरोध करने वालों के साथ यही होगा। अध्याय 17 श्लोक 15 में आने वाली उनकी प्रार्थना के बीच में, मेरी प्रार्थना यह नहीं है कि आप उन्हें दुनिया से बाहर ले जाएं, बल्कि यह है कि आप उन्हें बुराई से बचाएं, इसका तात्पर्य यह है कि यीशु के शिष्यों को दुनिया से उन मूल्यों से बचाना है जो शत्रुतापूर्ण हैं। ईश्वर में उन्हें उस दुष्ट से बचाना शामिल है जिसे जॉन में अन्यत्र दुनिया के शासक के रूप में वर्णित किया गया है। प्रथम जॉन की पुस्तक इन शब्दों के साथ समाप्त होती है जो कुछ इस तरह हैं कि पूरी दुनिया दुष्ट में निहित है, हम भगवान के छोटे बच्चे हैं लेकिन पूरी दुनिया दुष्ट के शासन के अधिकार क्षेत्र में है।

तो यहां हमारे पास बहुत स्पष्ट रूप से यह द्वंद्व है, यीशु के नैतिक मूल्यों के बीच यह द्वैतवाद जो कि पिता के हैं और दुनिया के नैतिक मूल्य जो शैतान के हैं और इसलिए यीशु में विश्वासियों को यहां यीशु द्वारा चेतावनी दी गई है कि उन्हें सावधान रहने की जरूरत है दुनिया का और एहसास करें कि यह उनका दोस्त नहीं बनने वाला है। तो ब्रह्मांड की दुनिया एक धिनौनी जगह है, भले ही इसे यीशु ने बनाया हो, यह उनके प्रति शत्रुतापूर्ण है और इसका शासक ईश्वर का कट्टर दुश्मन है। तो, आप शायद इस बिंदु पर कुछ इस आशय की बात सुनने की उम्मीद करेंगे कि ईश्वर केवल दुनिया का न्याय करेगा, लेकिन ऐसा नहीं है।

ईश्वर के प्रति संसार की सारी शत्रुता और शत्रुता के बावजूद और इसके शासक शैतान की घोर दुष्टता के बावजूद, बाइबल में शायद सबसे बड़ी आश्चर्यजनक चीजों में से एक यह है कि इन सबके बावजूद संसार ईश्वर को प्रिय है। ईश्वर ने अपनी रचना को नहीं छोड़ा है, भले ही वह उसके विरुद्ध हो गई हो, ईश्वर ने अपने बेटे को उस दुनिया में भेजा, जिसे उसने बनाया था और भले ही उनमें से अधिकांश ने उसे अस्वीकार कर दिया था, लेकिन कुछ ने उसे स्वीकार कर लिया। इसलिए, भगवान अभी भी दुनिया के लोगों को अपने बच्चे बनने के लिए अधिकृत कर रहे हैं यदि वे यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगे और भगवान उन्हें नया जन्म और अपने लोग बनने की क्षमता दे रहे हैं।

इसलिए, हम खुद को जॉन के बहुत ही सामान्य छंदों की याद दिलाने के लिए वापस जाते हैं जिन्हें अक्सर जॉन अध्याय 1 श्लोक 29 में उद्धृत किया जाता है, जॉन बैपटिस्ट ने कहा था कि भगवान के मेरे को देखो जो दुनिया के पाप को दूर ले जाता है। यूहन्ना 3 16 परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा। अन्य ग्रंथों में अध्याय 6 में जगत के जीवन के लिए जीवन की रोटी दी गई है, अध्याय 8 श्लोक 12 में जगत की ज्योति में हूं।

यीशु ने अध्याय 12 में श्लोक 46 और 47 में दुनिया के शासक के रूप में शैतान के बारे में बहुत यथार्थवादी ढंग से बात की है। मैं दुनिया में प्रकाश के रूप में आया हूं ताकि जो कोई भी मुझ पर विश्वास करता है वह अंधेरे में न रहे। अगले श्लोक में मैं दुनिया का न्याय करने के लिए नहीं बल्कि दुनिया को बचाने के लिए दुनिया में आया हूं 12 47।

इसलिए, मैं दुनिया में अपने विरोधियों को नष्ट करने के बजाय भगवान की इस चाल को पूरी तरह से अभूतपूर्व और अप्रत्याशित मानूंगा। भगवान यीशु के रूप में दुनिया को अपना गर्मजोशी से आलिंगन देते हैं और कहते हैं, वापस आओ मेरे पास आओ और मैं एक बार फिर तुम्हारा पिता बनूंगा। और हम दुनिया की दुश्मनी के बावजूद यहां ऐसा होते हुए देख रहे हैं।

इसलिए, हम दुनिया की इस चर्चा को फिर से यह ध्यान देकर समाप्त करते हैं कि यीशु ने क्रूस पर अपने मुक्ति कार्य से इस पर विजय प्राप्त की है। उसने दुष्ट की शक्ति को नष्ट कर दिया है और मानवता को ईश्वर के साथ संगति में रहने का एक नया मौका दिया है। इसलिए उसने यीशु के पुनरुत्थान की शक्ति से खुद को दुनिया के शासक से अधिक शक्तिशाली दिखाया है।

तो, यीशु ने अब दुनिया के शासक का स्थान ले लिया है। वह संसार का शासक है। और जैसे ही आप इन सभी पाठों को एक साथ रखते हैं और इसे एक वैचारिक प्रणाली में लाने का प्रयास करते हैं।

यह वास्तव में रहस्योद्घाटन में अच्छी तरह से खेला गया है जहां यीशु को विजेता के रूप में वर्णित किया गया है, यहूदा की जनजाति की पंक्ति के रूप में जिसने दुश्मन पर विजय प्राप्त की है और दुनिया में मौजूद बुराई पर काबू पाया है। तो, यह आश्चर्यजनक है जब हम जॉन के सुसमाचार में यीशु के बारे में पढ़ते हैं कि उसने दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली है। हमारे पास न केवल काबू पाने की एक बहुत बड़ी गहन अवधारणा है बल्कि दुनिया की इकाई में बुराई का एक बड़ा समूह भी है जिसे यीशु ने दूर किया है।

और हम अपना बाकी समय सिर्फ इसके बारे में बात करने में बिता सकते हैं लेकिन हमें आगे बढ़ने की जरूरत है। हम विशेष रूप से जॉन के गॉस्पेल में महिमा के विचार के बारे में पढ़ते हैं। और जैसे ही अध्याय 17 में अपने शिष्यों के लिए प्रभु की प्रार्थना शुरू होती है, महिमा का विषय एक बार फिर सामने आता है।

इसलिए, यह हमारे लिए आवश्यक है कि हम जॉन की महिमा की पृष्ठभूमि को देखें और जिस तरह से भगवान ने खुद को अपने लोगों के सामने प्रकट किया है, जो मुझे लगता है कि हिब्रू बाइबिल जिस तरह से संचालित हुई है, उसमें भगवान की महिमा के रूप में संदर्भित है। . इसलिए, हम निर्गमन 33 और 34 में परमेश्वर की महिमा को बहुत पहले से देखते हैं। मूसा इसे बेहतर ढंग से समझना चाहता था।

हमने इस समय तक तम्बू में परमेश्वर की महिमा को पहले ही देख लिया था कि परमेश्वर ने मूसा को निर्माण करने का निर्देश दिया था, जिससे इज़राइल जहां भी वे गए, वहां गतिशील तरीके से परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट हुई। लेकिन हमारे पास यह संदर्भ है कि मूसा चाहता था कि वह पूरी तरह से समझ सके, ईश्वर कौन है, इसकी बेहतर समझ, ईश्वर के सभी गुणों के साथ अधिक घनिष्ठ संबंध और साथ ही वह उन्हें समझ सके। मुझे यकीन नहीं है कि हम वास्तव में महिमा की अवधारणा को कैसे परिभाषित करते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हम निश्चित रूप से इसे भगवान के अस्तित्व की प्रकट उत्कृष्टता के रूप में वर्णित कर सकते हैं।

ताकि ईश्वर के सभी गुणों का समुच्चय इस सीमा तक हो कि उन्हें मनुष्य द्वारा समझा जा सके। ईश्वर की उत्कृष्टता, ईश्वर का अद्भुत चरित्र प्रकट हो रहा है, हालांकि एक छेने हुए तरीके से मुझे यकीन है कि ईश्वर ने उन सीमित प्राणियों को बनाया है। तो यह परमेश्वर की महिमा होगी।

इसलिए, मेरे विचार से, हमारे लिए ईश्वर की महिमा करना केवल इस उत्कृष्टता, इस चरित्र, इन अवर्णनीय गुणों वाले ईश्वर को स्वीकार करना, पहचानना और विस्मय में खड़े होना और उसकी पूजा करना होगा। तो, हमारे विचारों में, हमारे शब्दों में और हमारे कार्यों में इस हद तक कि ये किया जाता है, सोचा जाता है और ऐसे तरीकों से बोला जाता है जो भगवान की सारी महिमा और भगवान की उत्कृष्टता को स्वीकार करते हैं, इस अर्थ में हम भगवान की महिमा करते हैं। इसलिए जब हम जॉन के सुसमाचार पर आते हैं तो इसकी प्रारंभिक शिक्षाओं में से एक जो मुझे लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण है, वह यह है कि यीशु ही वह व्यक्ति है जिसने ईश्वर की महिमा को प्रकट किया है।

अध्याय 1 और पद 14. वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में बस गया और हमने उसकी महिमा देखी। कुछ छंदों के बाद श्लोक 18 में यीशु को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो ईश्वर का व्याख्याकार है।

एकमात्र और एकमात्र ईश्वर. उसी ने उसे प्रकट किया है। तो, यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकटकर्ता है।

तो, हमारे पास जॉन में कई, कई ग्रंथ हैं। हम उन सभी को देखने के लिए समय नहीं निकालेंगे जहां हम यीशु के शब्दों और कार्यों के माध्यम से भगवान की महिमा को प्रकट होते हुए देखते हैं। इसलिए हम वास्तव में परमेश्वर की महिमा के बारे में बात नहीं कर सकते जब तक कि हम सीधे तौर पर प्रभु यीशु मसीह के बारे में बात न करें।

यीशु के पुनरुत्थान के बाद की महिमा वह है जो हमें आत्मा के आगमन की ओर ले जाती है। 739 में बताया गया कि आत्मा नहीं आ सकती, और अभी तक पूरी तरह से नहीं दी गई है, क्योंकि यीशु को महिमामंडित नहीं किया गया है। एक बार जब यीशु की महिमा हो गई और वह महिमा के उस स्थान पर लौट आया जिसे उसने स्वर्ग में पिता के साथ अनंत काल से रखा था, तब आत्मा को पृथ्वी पर भेजा जाता है ताकि वह वहीं से शुरू हो सके जहां यीशु ने छोड़ा था और प्रेरितों के लिए भगवान की महिमा को प्रकट करना जारी रखा। .

इसलिए, जब आप जॉन अध्याय 17 का अध्ययन करना और पढ़ना शुरू करते हैं, तो आप इसका अगला भाग देखते हैं क्योंकि जॉन 17 में यीशु की प्रार्थना उस महिमा के बारे में बात करती है जो उसे पिता के साथ थी, जो मुझे लगता है कि निश्चित रूप से आश्चर्यजनक है। इसलिए, पद 17 में यीशु ने पिता की ओर देखते हुए यह कहा और प्रार्थना की, पिता, समय आ गया है, अपने पुत्र की महिमा करो, दूसरे शब्दों में, अपने पुत्र की योग्य स्तुति करो कि तुम्हारा पुत्र तुम्हारी महिमा करे। यह हमें जॉन अध्याय 13 में श्लोक 31 और 32 के आसपास नई आज्ञा की प्रस्तावना की याद दिलाता है।

वह कहता है कि तू ने उसे सब मनुष्यों पर अधिकार दिया है, कि जिन सभी को तू ने उसे दिया है उन सभी को वह अनन्त जीवन दे। अब अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ एकमात्र परमेश्वर को, और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें। ध्यान दें कि यीशु अपने मंत्रालय को कैसे देखता है

और वह इसका वर्णन इस प्रकार करता है, आपने मुझे जो काम करने के लिए दिया था उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर आपको महिमा दी है।

यदि आप यह जानना चाहते हैं कि जोहानाइन सोच में यीशु के दृष्टिकोण से यीशु का मंत्रालय कैसा है, तो संक्षेप में यह यीशु का मंत्रालय है। जो काम आपने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने आपको पृथ्वी पर गौरव दिलाया। तो, जिस तरह से उसके जीवन और मंत्रालय ने पिता की महिमा की है, उसके जवाब में यीशु पिता से पूछ रहा है, अब वह पारस्परिक तरीके से पिता से उसे महिमा लौटाने के लिए कह रहा है।

तो, पद 5 कहता है, अब पिता मुझे अपनी उपस्थिति में उसी महिमा से महिमामंडित करो जो जगत के आरंभ से पहले मेरी तुम्हारे साथ थी। यह स्पष्ट रूप से यीशु पिता से कह रहा है, मैं अपनी पूर्व-मौजूद स्थिति, अपनी स्वर्गीय महिमा, उस उत्कृष्टता को बहाल करने वाला हूं जो मैं एक बार आपके पक्ष में स्वर्ग में प्रकट कर रहा था जिसे मैंने मानव बनने के लिए, मांस बनने के लिए त्याग दिया था। . तो अब यीशु का परमेश्वर की महिमा करने का तरीका अवतारी अवस्था में परमेश्वर की महिमा करने, शब्द देहधारी होने से बदलकर, परमेश्वर की महिमा करने और स्वर्गीय स्थिति में परमेश्वर की नैतिक उत्कृष्टता और मूल्य को साझा करने में बदल जाएगा।

इसलिए, जब यीशु यहां कहते हैं, मैं वह महिमा वापस चाहता हूं जो दुनिया के अस्तित्व में आने से पहले मुझे तुम्हारे साथ मिली थी, मेरे ख्याल से यह जॉन के सुसमाचार में सबसे स्पष्ट ग्रंथों में से एक है जो हमें समझाता है कि यीशु का पूर्व-अस्तित्व कैसा था। हम वास्तव में जॉन के सुसमाचार में ईश्वर की महिमा को पूरी तरह से नहीं समझ सकते हैं, जब तक कि हम सहायक की भूमिका में नहीं आते, क्योंकि यीशु कहते हैं कि एक बार जब वह चले गए तो हम सोच सकते हैं कि ईश्वर की महिमा चली गई है और हमारे पास एक और इचबॉर्ड स्थिति है जहां अब कोई महिमा नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे यहजेकेल की किताब के अनुसार पुराने नियम के मंदिर से कोई महिमा नहीं थी। लेकिन हमें अध्याय 16 श्लोक 14 में बताया गया है कि सांत्वना देने वाला जो काम करेगा उनमें से एक, सहायक, वकील, पैराक्लेटोस, आत्मा, 16.14 के अनुसार वह जो काम करेगा उनमें से एक यह है कि वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि जो कुछ वह तुम्हें बताएगा वह मुझ से प्राप्त होगा।

तो, आत्मा की भूमिका के बारे में यह एक बहुत ही दिलचस्प कथन है। यीशु ने अन्यत्र कहा है कि आत्मा अपने बारे में नहीं बोलेंगी। आत्मा किसी नए संप्रदाय के नेता की तरह बनने के लिए नहीं है।

आत्मा यीशु के साथ प्रतिस्पर्धा में नहीं है कि उसके पास यीशु से बड़ा चर्च हो। बल्कि आत्मा कुछ नया शुरू करने के लिए नहीं बल्कि शिष्यों को नवीनीकृत करने के लिए आती है ताकि वे याद कर सकें कि क्या बीत चुका है, यीशु के जीवन और मंत्रालय में क्या बीत चुका है। इसमें कहा गया है कि वह मुझसे वही प्राप्त करेगा जो वह तुम्हें बताएगा।

इसलिए हम चर्च में आत्मा के सापेक्ष मूल्य और कार्य को समझना चाहते हैं और जिस भी हद तक हम खुद को करिश्माई या गैर-करिश्माई या पेंटेकोस्टल या गैर-पेंटेकोस्टल के रूप में पहचानना

चाहते हैं, जिस पर हम सभी सहमत होना चाहते हैं, जैसा कि हम देखते हैं हम अपने बीच में ईश्वर के त्रिमूर्ति कार्य की पूर्णता को कार्यान्वित कर रहे हैं, यहाँ यह स्वीकार करना है कि पवित्र आत्मा का कार्य यीशु की महिमा करना है, न कि उसकी अपनी इकाई बनना या अपना स्वयं का आंदोलन शुरू करना नहीं। पवित्र आत्मा क्रिस्टोसेंट्रिक है। पवित्र आत्मा चर्च की ओर से यीशु और यीशु मसीह के कार्य को महिमामंडित करने, महत्व देने की प्राथमिकता पर केंद्रित है।

तो, यदि आत्मा इसी बारे में है, तो उसके पिता के रूप में हमें किस बारे में होना चाहिए? हमें अध्याय 15 में बेल और शाखाओं के सादृश्य में भगवान के लिए फल लाने के संदर्भ में बताया गया था, शायद उस सादृश्य का अंतिम पद और यीशु ने इसके बारे में सिखाया, यह मेरे पिता की महिमा के लिए है कि आप बहुत फल लाते हैं और दिखाते हैं तुम मेरे शिष्य बनो। तो मसीह में हमारी सारी बहुतायत और जिस तरह से हम उसके लिए फल लाना चाहते हैं, कहने का तात्पर्य यह है कि न केवल वे लोग जिन्हें हम अच्छे के लिए प्रभावित करते हैं जो हमारे मंत्रालय के माध्यम से ईसाई बन जाते हैं, बल्कि सभी मसीह-चरित्र की तरह जिसे हम दुनिया में प्रकट करने में सक्षम हैं ताकि लोग हमारे अंदर मसीह को देख सकें, यह सब शब्द के व्यापक संभव अर्थ में फल है, यह सब केवल हमारे लिए या हमारे संप्रदाय या हमारे लिए नहीं किया जाता है आंदोलन या कुछ भी, यह सब अंततः पिता की महिमा के लिए किया जाता है। तो जैसे ही सहायक यीशु को प्राथमिकता देना जारी रखता है और उस पर महिमा और उसकी उत्कृष्टता की स्वीकार्यता जारी रखता है, तो हमें भी यही करना चाहिए।

हमें ऐसे लोगों के रूप में माना जाता है जो आत्मा के अनुरूप हैं और आत्मा यीशु के अनुरूप है। इसलिए, यदि आत्मा क्रिस्टोसेंट्रिक है, तो बेहतर होगा कि हम आत्मा के अनुरूप हो जाएं और बिल्कुल वैसा ही हो जाएं। जब हम यूहन्ना 17 में यीशु की प्रार्थना पढ़ते हैं, तो ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके बारे में हम इस प्रार्थना के संदर्भ में बात कर सकते हैं।

मुझे लगता है कि इसे समझने की कोशिश करने का एक तरीका सिर्फ यह देखना है कि इस अध्याय में दुनिया का वर्णन किस तरह किया गया है और दुनिया के साथ शिष्यों का रिश्ता क्या है। जिन चीजों से हम शुरुआत करेंगे उनमें से एक यह है कि 17.6 में यीशु उत्तर देते हैं और कहते हैं, क्षमा करें, मैं गलत अध्याय में हूँ। यीशु 17.6 में कहते हैं, हे पिता, मैं ने तुझे प्रगट किया है, अर्थात्, मैं ने तुझे उन पर प्रगट किया है, जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया है।

वे तुम्हारे थे और तुमने उन्हें मुझे दे दिया। उन्होंने आपकी बात मान ली है। हालाँकि, आप दुनिया से यीशु को विश्वासियों को देने वाले पिता के इस विचार को समझते हैं, मुझे लगता है कि धार्मिक रूप से इसके लिए हमारे पास चुनाव का सिद्धांत होगा।

हालाँकि, आप इसे समझते हैं, आपको इसे उस तरीके के रूप में समझना होगा जिसमें शिष्यों की यीशु के अनुयायियों के रूप में पहचान होती है। यह केवल हमारा विचार नहीं है कि हम उसका अनुसरण करना चाहते हैं। यह निश्चित रूप से है, लेकिन यह हमारे विचार से बहुत पहले ही भगवान का विचार था।

तो, यीशु कहते हैं कि यदि हम यीशु के अनुयायी हैं, तो हम वे लोग हैं जिन्हें भगवान ने दुनिया से यीशु को दिया है। तो, हम अपनी पहचान पाते हैं, हम अपना मिशन ढूंढते हैं, और हम अपने मूल्य अब अखबार पढ़कर नहीं, बल्कि पवित्र ग्रंथ पढ़कर पाते हैं। हम अपने चारों ओर देखकर और दुनिया में जो कुछ भी काम करता है उसे ढूंढकर अपना विश्वदृष्टिकोण प्राप्त नहीं करते हैं।

हम इसे प्राप्त करते हैं, हमारे सबसे बुनियादी मूल्य और जिन चीजों को हम संजोते हैं, जिन चीजों की ओर हम काम करते हैं, हम इसे भगवान के रहस्योद्घाटन परिप्रेक्ष्य से प्राप्त करते हैं। धार्मिक शब्दों में कहें तो, हमारे मूल्य दुनिया से एक अंतर्निहित अर्थ में नहीं आते हैं, IMMANENT, बल्कि हमारे मूल्य पारलौकिक हैं। वे पवित्र ग्रंथों में ईश्वर के रहस्योद्घाटन से आते हैं।

भगवान ने हमें दुनिया से चुना है। 17:9, यीशु ने इसी तरह की एक और टिप्पणी की, मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूँ। मैं संसार के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ जो आपने मुझे दिए हैं, क्योंकि वे आपके हैं।

अब हम जानते हैं कि परमेश्वर जगत से प्रेम करता है। वह लोगों से भरे इस पूरे ग्रह से प्यार करता है, जिनमें से कई लोग उसकी इच्छा नहीं निभाते हैं और उसका बहुत करीब से पालन नहीं करते हैं। और हम जानते हैं कि इन सबके बावजूद, भगवान ने दुनिया से प्यार किया और अपने बेटे को भेजा ताकि वह उस पर विश्वास कर सके।

लेकिन जब हम 17:9 जैसे पाठ को पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि भगवान का विश्वासियों के साथ एक विशेष संबंध है। और यीशु कहते हैं कि मैं उनके लिये मध्यस्थता कर रहा हूँ। मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

मैं इस विशेष अर्थ में दुनिया के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ। इसलिए, भगवान के पास एक विशेष मूल्य है जो वह अपने अनुयायियों को देता है, और यीशु विशेष रूप से उनके लिए मध्यस्थता कर रहे हैं। इसलिए, हम न केवल दुनिया से बाहर चुने गए हैं, जैसा कि हमने पढ़ा है, बल्कि श्लोक 11 कहता है कि यीशु में विश्वास करने वाले अभी भी दुनिया में हैं।

मैं अब संसार में नहीं रहूंगा, परन्तु वे अब भी संसार में हैं। मैंने यह कहते हुए सुना है कि कुछ लोग इतने स्वर्गीय विचारों वाले होते हैं कि वे सांसारिक रूप से अच्छे नहीं होते। शायद उन प्रकार के लोगों ने देखा है कि बाइबल कहती है कि भगवान ने दुनिया में से विश्वासियों को चुना है।

हालाँकि, शायद उन्होंने यह नहीं पढ़ा है कि उन्हें अभी भी दुनिया में रहना है। तो, इन पूर्वसर्गों में एक प्रकार का विरोधाभास है। एक ऐसी भावना है जिसमें विश्वास करने वाले लोग दुनिया से बाहर नहीं हैं।

वे संसार के नहीं हैं। वे दुनिया के मूल्यों से अपनी अंतिम पहचान मूल्य प्रणाली और जीवन के लक्ष्य नहीं खोज पाते। फिर भी वे दुनिया में हैं।

अतः हम संसार में तो हैं, परन्तु संसार के नहीं हैं। तो, हम आगे बढ़ते हैं और यहां कुछ अन्य कथनों पर ध्यान देते हैं जो दिलचस्प हैं। 17.14, मैं ने उन्हें तेरा वचन दिया है, और जगत ने उन से बैर किया है, क्योंकि मैं जगत का हूं, इस से अधिक वे जगत के नहीं।

तो, यीशु की पारलौकिकता, उसके मूल्यों, उसके मिशन और लक्ष्यों के संदर्भ में, जो उसे केवल पिता को खुश करने के लिए थे, अब हमारे द्वारा साझा किए जाने हैं। हमें सांसारिक मूल्यों के साथ तालमेल बिठाने में सबसे बड़ा आनंद नहीं मिलता। हमें अपना सबसे बड़ा आनंद मिलता है, भले ही यह हमें ऐसा जीवन जीने में उत्पीड़न देता है जो भगवान और उनके पुत्र, यीशु मसीह को प्रसन्न करता है।

17:16, फिर से, यह दोहराया गया है कि यीशु में विश्वास करने वाले इस दुनिया के नहीं हैं, भले ही वह इस दुनिया का नहीं है। साथ ही, अध्याय 17, श्लोक 18 कहता है, जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं भी उन्हें जगत में भेजता हूं। इसलिए, जब आप इन सभी पूर्वनिर्धारितताओं को संतुलित करने का प्रयास करते हैं, तो विश्वासी दुनिया के नहीं हैं बल्कि दुनिया से चुने गए हैं, फिर भी वे दुनिया में हैं और उन्हें दुनिया में भेजा गया है।

ईसाइयों को एक अर्थ में सांसारिक होना चाहिए? क्योंकि अगर हम दुनिया में मौजूद लोगों से जुड़ नहीं सकते हैं, तो हम नहीं समझ पाते हैं कि वे कहाँ से आ रहे हैं और हम उनसे उनकी अपनी भाषा में बात नहीं कर सकते हैं, जैसे यीशु ने निश्चित रूप से अपने समकालीनों से उनकी अपनी भाषा में बात की थी। यदि हम ऐसा करने में सक्षम नहीं हैं, तो हम वह व्यक्ति होंगे जो इतने स्वर्गीय दिमाग वाले हैं कि वे सांसारिक रूप से अच्छे नहीं हैं। मुझे लगता है कि सवाल यह है कि क्या चर्च के सामने सबसे बड़ा खतरा एक या दूसरा है।

क्या हम इतने स्वर्गीय सोच वाले हैं कि हम सांसारिक रूप से अच्छे नहीं हैं या क्या हम इतने सांसारिक सोच वाले हैं कि हम स्वर्गीय अच्छे नहीं हैं? इसलिए, जब हम सोचते हैं कि हम अब इस दुनिया में अपनी अंतिम पहचान कैसे नहीं पाते हैं, तो हम अपनी अंतिम पहचान भगवान में पाते हैं क्योंकि उन्होंने खुद को मसीह में प्रकट किया है, साथ ही हमें एहसास होता है कि हमें बाहर निकालना भगवान की इच्छा नहीं है। दुनिया के लिए या हमारे लिए पूरे चर्च के रूप में जीने के लिए, कम से कम दुनिया से पूर्ण अलगाव की एक मठवासी जीवनशैली। क्योंकि अगर हम दुनिया से नहीं जुड़ेंगे, तो हम दुनिया में भेजे जा रहे यीशु के दूतों के रूप में कभी भी कोई अच्छा काम नहीं करेंगे। इसलिए, मुझे लगता है कि ये सभी प्रस्ताव काफी आश्चर्यजनक हैं और उनके निहितार्थों पर विचार करने से हमें विचार करने के लिए बहुत कुछ मिलेगा और यह समझने के लिए मूल्यवान होगा कि दुनिया में रहते हुए हमें क्या करना चाहिए।

जैसे ही हम दुनिया की चर्चा समाप्त करते हैं, ध्यान दें कि जैसे-जैसे हमें ये सभी पूर्वसर्ग समझ में आते हैं और समझते हैं कि यह कैसे काम करता है कि हम दुनिया के नहीं हैं, भले ही हमें इसमें भेजा गया हो, हमारी एकता, 1721, होगी लोगों को विश्वास में लाने का एक कारक। यीशु कहते हैं कि मैं प्रार्थना कर रहा हूं कि वे सभी 1721 में एक हो जाएं। बस, पिता, जैसे तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूं, वे भी हम में हों ताकि दुनिया विश्वास कर सके कि तुमने मुझे भेजा है।

ईश्वर को अभी भी इस दुनिया में दिलचस्पी है, भले ही वह स्वीकार करता है कि यह उसके लिए शत्रुतापूर्ण है। वास्तव में, ईश्वर चाहता है कि उसके अनुयायी मसीह और एक-दूसरे के प्रति इतने एकजुट हों कि दुनिया देख सके कि वे दुनिया से अलग हैं और दुनिया को विश्वास की ओर आकर्षित करेंगे। जैसे ही 17:25 में प्रार्थना समाप्ति के करीब पहुंचती है, यीशु एक बार फिर इसके लिए प्रार्थना करते हैं।

धर्मी पिता, यद्यपि संसार तुम्हें नहीं जानता, मैं तुम्हें जानता हूँ और वे जानते हैं कि तुमने ही मुझे भेजा है। मैं ने तुम्हें उन पर प्रगट किया है, और प्रगट करता रहूँगा, और इसलिये नहीं, कि जो प्रेम तुम मुझ से रखते हो, वह उन में रहे, और मैं आप उन में बना रहूँ। यह जॉन के सुसमाचार में अपने शिष्यों के बारे में यीशु के अंतिम शब्द हैं, और कथा साहित्य में, अंत तनाव का एक सिद्धांत है कि आप यह याद रखते हैं कि साहित्य के विभिन्न भागों का निष्कर्ष क्या है।

इसलिए, मुझे लगता है कि यहां जो कहा जा रहा है उस पर जोर देना और उस पर ध्यान देना काफी बुद्धिमानी होगी। यीशु ने अपने मंत्रालय का सारांश यह कहकर दिया, मैंने तुम्हें उन्हें बता दिया है। वह कहते हैं कि मैं आपको अवगत कराता रहूँगा।

मेरा मानना है कि इसका तात्पर्य चर्च में विश्वासियों के जीवन में पवित्र आत्मा के माध्यम से यीशु के चल रहे कार्य से है। यीशु को बनाना जारी रखना, शिष्यों को पिता के बारे में बताना जारी रखना इसलिए किया जाता है ताकि जो प्रेम ईश्वर को यीशु के लिए है, पाठ के शब्दों में, जो प्रेम आपके मन में मेरे लिए है वह उनमें हो और मैं स्वयं भी ऐसा कर सकूँ। उनमें रहो। फिर, मुझे लगता है कि यह सारी भाषा आस्तिक के जीवन में पवित्र आत्मा के चल रहे कार्य को चर्च के बीच में यीशु की चल रही उपस्थिति के रूप में मान रही है।

इसलिए ऊपरी कमरे में यीशु के प्रवचन पर हमारी आखिरी टिप्पणी के रूप में, मुझे लगता है कि हम इस सब के बारे में एक मिशनरी दृष्टिकोण से सोच सकते हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जब हम विचार करते हैं कि यीशु ने शिष्यों के लिए क्या किया है और जॉन 13-17 में उसने शिष्यों से क्या कहा है, तो उसे परम क्षमाप्रार्थी कहा जा सकता है। इससे मेरा तात्पर्य यह है कि दुनिया में विभिन्न चर्च विभिन्न विशिष्टताओं के लिए जाने जाते हैं, और उनमें से कई बहुत अच्छे हैं।

कुछ चर्च सैद्धांतिक रूढ़िवादिता और ईश्वर को सही ढंग से समझने, धर्मग्रंथ को सही ढंग से समझने के बारे में बहुत चिंतित होने के लिए जाने जाते हैं। निश्चित रूप से, यह चर्च का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यदि चर्च दुनिया को एक अनिश्चित संदेश दे रहा है, अगर उसका संदेश धर्मग्रंथ के प्रकाश में स्पष्ट और सही नहीं है, तो इसका दुनिया के लिए बहुत कम या कोई मूल्य नहीं है।

कुछ चर्च ऐसे स्थानों के रूप में जाने जाते हैं जहाँ आध्यात्मिक उपहारों का स्पष्ट रूप से प्रयोग किया जाता है। सेवा के अधिक प्रतीत होने वाले विनम्र उपहारों या अधिक शानदार प्रकार के करिश्माई उपहारों के संदर्भ में आप इसके बारे में क्या सोचते हैं? मैं वास्तव में यहाँ उसके बीच अंतर नहीं कर रहा हूँ। कुछ चर्च ऐसे चर्च हैं जहाँ पवित्र आत्मा स्पष्ट रूप से मौजूद है, हालाँकि, आप इसे परिभाषित करना चाहते हैं, और यह एक अच्छी बात भी है।

कुछ चर्च ऐसे चर्च के रूप में जाने जाते हैं जहां सदस्यों, वहां जाने वाले लोगों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है और वे परिवार जैसे होते हैं। यह एक चर्च है जहां आप जा सकते हैं और वास्तव में शिक्षित हो सकते हैं, और आपकी ज़रूरतें पूरी की जा सकती हैं, और वे वहां आपकी परवाह करते हैं, और आप जानते हैं कि जब आप वहां जाएंगे, तो आपसे प्यार किया जाएगा। जाहिर है, यह बहुत महत्वपूर्ण बात है।

अन्य चर्च समुदाय में अपनी पहुंच के लिए जाने जाते हैं, और यह स्पष्ट रूप से आवश्यक है। यदि हम जरूरतमंद लोगों तक नहीं पहुंचते हैं, तो उन्हें कैसे पता चलेगा कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया है? तो, ये सभी चीजें अच्छी हैं, और वे सभी उचित हैं, और वे सभी आवश्यक हैं, लेकिन इनमें से कोई भी ऐसी चीजें नहीं हैं जिन पर यीशु ने इस प्रवचन में सीधे तौर पर जोर दिया है। अपने लोगों से विदाई में, यीशु ने सबसे पहले प्रेम के मामले पर ध्यान केंद्रित किया।

एक दूसरे से प्रेम करो जैसे मैंने तुमसे तुम्हारे प्रेमपूर्ण अंतर्संबंधों द्वारा, चर्च में प्रेम की पारस्परिक प्रकृति द्वारा प्रेम किया है। इस प्रकार सब लोग जान लेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो। तो, यह शिष्यों के लिए यीशु का एक उपदेश है।

यह वास्तव में सबसे पहली बात है जो उसने यहूदा के समूह छोड़ने के बाद उनसे कही थी, और अब वह 12 के बजाय 11 से बात कर रहा है। इसलिए, सबसे पहली बात वह उन शिष्यों से कहता है जो अब शोक मनाने जा रहे हैं क्योंकि उसने ऐसा किया है बस उनसे कहा, मैं जा रहा हूं और आप नहीं आ सकते। वह पहली चीज़ क्या होगी जो वह उन्हें बताएगा जो उनकी सबसे अधिक ज़रूरत को पूरा करेगी? सबसे पहली बात जो यीशु उन्हें बताते हैं कि उनकी अनुपस्थिति में कैसे व्यवहार करना है, वह है एक दूसरे से प्रेम करना।

जाहिर तौर पर इसके आंतरिक निहितार्थ होंगे। आखिरी चीज़ जो आप यीशु के चले जाने पर घटित होते देखना चाहेंगे, वह यह है कि चर्च एक-दूसरे की परवाह न करे और विभिन्न सांप्रदायिक पार्टियों या यहाँ तक कि व्यक्तियों में विभाजित हो जाए जो एक-दूसरे से लड़ रहे हैं। जाहिर तौर पर यह अच्छा नहीं होगा, लेकिन वह जो कहते हैं उसका मुद्दा यह नहीं है।

वो ये नहीं कहते कि एक दूसरे से प्यार करो जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है ताकि तुम बिखर न जाओ। वह कहते हैं कि एक-दूसरे से वैसे ही प्यार करो जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है ताकि तुम दुनिया तक सार्थक पहुंच बना सको। इस से सब जान लेंगे कि तुम मेरे चेले हो।

फिर प्रवचन के मुख्य भाग के बाद, जो शिष्यों को सुसज्जित करने और उनके साथ यीशु की उपस्थिति बनाए रखने और उन्हें यीशु से जुड़े रहने में सक्षम बनाने के लिए सहायक, सहायक, सहायक और पवित्र आत्मा के आने पर जोर देता है। उस पर कायम रहो और खूब फल लाओ क्योंकि उसके बिना तुम कुछ भी करने में सक्षम नहीं हो, प्रवचन के अंत में जहां यीशु शिष्यों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, उन्हें यूहन्ना 13 की तरह उपदेश नहीं दे रहे हैं, बल्कि यूहन्ना में उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं 17, पिता से उनकी प्रार्थना का लगभग अंतिम उद्देश्य या लक्ष्य यह है कि वह चाहते हैं कि शिष्य एक हों जैसे हम एक हैं। मुझे यह बहुत अद्भुत लगता है। यह आश्चर्यजनक है कि यीशु ने कहा कि हमें एक-दूसरे से उसी प्रकार प्रेम करना चाहिए जैसे उसने हमसे प्रेम किया

है, विशेष रूप से जब हम जानते हैं कि जिस प्रकार उसने हमसे प्रेम किया है यदि हम जॉन में इसका थोड़ा अनुसरण करें, उसी प्रकार पिता ने भी उससे प्रेम किया है।

तो, प्रारंभिक उपदेश का निष्कर्ष यह है कि ईसाई एक-दूसरे के साथ जिस तरह का प्यार देते और लेते हैं, उसी तरह का प्यार पिता और पुत्र एक-दूसरे के साथ रखते हैं। इसलिए, अंत में जब वह प्रार्थना कर रहा है, तो यीशु प्रार्थना कर रहा है कि उसके लोग एक हो जाएं और वह यह नहीं कह रहा है कि वे एक हो सकते हैं जैसे कि एक एंटीक कार क्लब एक हो सकता है क्योंकि वे सभी मॉडल टी फोर्ड या कुछ और में रुचि रखते हैं वह प्रकृति। ऐसा नहीं है कि इसमें कुछ गलत है, लेकिन यीशु जो कह रहे हैं वह कहीं अधिक आश्चर्यजनक और गहरा है, क्या आपको नहीं लगता? कि जैसे हम एक हैं, वैसे ही वे भी एक हों, कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।

अब जिस एकता को हम फिर से दुनिया के सामने प्रदर्शित करना चाहते हैं वह उस प्रकार की एकता नहीं है जो केवल एक विशेष उद्देश्य की ओर उन्मुख है। हमारे पास बहुत सारे राजनीतिक दल और क्लब और विभिन्न प्रकार के वकालत समूह हैं जो एक विशेष कारण के लिए एक साथ खड़े होने में काफी अच्छे हैं। लेकिन यीशु यहां जिस एकता के बारे में बात कर रहे हैं, जो दुनिया को विश्वास करने के लिए प्रेरित करेगी, वह एक प्रकार का साझा जीवन और एकता और एकता है जो उनके और पिता द्वारा साझा की गई है।

फिर, क्या आपको नहीं लगता कि यह आश्चर्यजनक है कि जिस तरह हमें एक-दूसरे से उसी तरह प्यार करना है जैसे ट्रिनिटी एक-दूसरे से प्यार करती है, हमें भी एक होना है जैसे ट्रिनिटी एक है? मुझे यह आश्चर्य से कम नहीं लगता कि यीशु हमें अध्याय 13 में ये बातें बताएं और अध्याय 17 में हमारे लिए इस तरह से प्रार्थना करेंगे। यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में मुझे नहीं लगता कि मैंने सुधारवादी धर्मशास्त्र में इसके बारे में बहुत कुछ सुना है, खासकर सृष्टिकर्ता-प्राणी भेद के दृष्टिकोण से।

यह कि एक-दूसरे के प्रति हमारा प्रेम और एक-दूसरे के साथ हमारी एकता अंतर-त्रिमूर्ति संबंधों पर आधारित होगी, लगभग विधर्म जैसा लगता है। लेकिन एक शिक्षा है जो मैंने ट्रिनिटी, सामाजिक ट्रिनिटी के संबंधपरक पक्ष में सुनी है, जिस तरह से ट्रिनिटी हमारी मुक्ति को पूरा करती है। जो शब्द मैंने सुना है उसे पेरीकोरिसिस कहा जाता है, कि ट्रिनिटी का एक व्यक्ति जो कर रहा है उसे ट्रिनिटी के अन्य व्यक्तियों द्वारा साझा किया जाता है, कि वहां एक आंतरिक एकता है और वे एक दूसरे से अलग होकर काम नहीं करते हैं।

मुझे लगता है कि इसे स्पष्ट रूप से कहने का एक तरीका यह है कि हम तीन देवताओं, त्रिदेववाद में विश्वास नहीं करते हैं, हम तीन व्यक्तियों के एक त्रिदेव ईश्वर में विश्वास करते हैं जो एक ही चीज़ के बारे में हैं। जॉन 13 से 17 के बारे में चौंकाने वाली बात यह होगी कि इस प्रवचन की पुस्तकें मूल रूप से हमें विश्वासियों के रूप में कह रही हैं कि एक-दूसरे के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और एक-दूसरे के साथ हमारी एकता और एक-दूसरे के कल्याण की तलाश इसी पर आधारित होनी चाहिए। उन्हीं चीज़ों को करने का दिव्य संबंध। और हम कह सकते हैं, ठीक है, यह असंभव है, हम मात्र प्राणी हैं, हम गिरे हुए हैं, हम यह हैं, हम वह हैं, हम भगवान नहीं हैं।

जाहिर है, मामला यही है। लेकिन भगवान ने यीशु के माध्यम से, अपने चुने हुए प्रिय प्रेरित, प्रिय शिष्य, जॉन के माध्यम से अब यह सादृश्य बनाया है और हमें बता रहे हैं कि हमें त्रिमूर्ति देवत्व के अनुरूप अपने रिश्तों को बनाने के बारे में गंभीर होना चाहिए। परमेश्वर हमसे यह मांग क्यों कर सकता है और हमसे यह अपेक्षा क्यों कर सकता है, इसका कारण यह है कि शुरुआत में, परमेश्वर ने हमें अपनी छवि में बनाया था।

इसलिए, भगवान के लिए अपने सीमित छवि धारकों को इस तरह से जीने के लिए कहना बहुत अधिक नहीं है कि वह उस अनंत निर्माता का मॉडल तैयार करें जिसने शुरुआत में छवि धारकों को बनाया था। तो जब आप सोचते हैं कि आप मसीह में अपने दोस्तों, विभिन्न रिश्तों में मसीह में अपने भाइयों और बहनों, जिन लोगों के साथ आप चर्च जाते हैं, आपके छोटे समूह के लोग, आपके बाइबिल अध्ययन के लोग, आपके पड़ोसी, जो भी, जो भी हैं, से कैसे संबंधित हैं प्रभु को जानो, बस इस बारे में सोचो, कि जॉन यहां ऊपरी कमरे में, विदाई प्रवचन में हमें जो बता रहे हैं, उसकी हम पूरी तरह से सराहना कर सकें, ताकि हम इस दुनिया में रहते हुए पूरी तरह से ईश्वर के लोग बन सकें, दयालु बन सकें। जिन लोगों को अन्य लोग जो ईसा मसीह को नहीं जानते हैं वे नोटिस करते हैं और उनकी सराहना करते हैं और सोचते हैं कि उन लोगों के पास कुछ न कुछ जरूर होगा, शायद मुझे उस पर गौर करना चाहिए। ऐसा होने के लिए, हमें उस तरह के लोग बनने की जरूरत है जो एक-दूसरे से उसी तरह प्यार करते हैं जैसे ईसा मसीह ने हमसे प्यार किया था, उसी तरह पिता परमेश्वर ने उनसे प्यार किया था, और ऐसे लोग बनने की जरूरत है जो पिता और पुत्र द्वारा प्रदर्शित समान आंतरिक गहरी एकता का प्रदर्शन करते हों।

यह मेरे लिए स्पष्ट है कि जॉन 13 से 17 के संदर्भ को देखते हुए, एकमात्र तरीका जिससे हम इस प्रकार के लोग होने के 100 मील के भीतर आ पाएंगे यदि हम पवित्र आत्मा के माध्यम से यीशु की चल रही उपस्थिति को शासन करने की अनुमति देते हैं हमारे जीवन में और हमें बेल में पूरी तरह से रहने के लिए नेतृत्व करने के लिए।

यह डॉ. डेविड टर्नर और जॉन के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 18 है, विदाई प्रवचन, दुख के बारे में शिक्षण और एक अंतिम प्रार्थना। यूहन्ना 16:16-17:26.